

**WIT AND HUMOUR, POETRY AND COUPLET
SECOND SESSION OF SIXTEENTH LOK SABHA
(07.07.2014 to 14.08.2014)**

Sr. No.	Date	Subject	Name of Member/Minister	Poetry/Humour/Couplet/ Repartee
1.	11.07.2014	Railway Budget – General Discussion – Demands for Excess Grants	Shri Adhir Ranjan Chowdhury	Poem
2	11.07.2014	Private Member's Resolution	Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'	Poem
3.	16.07.2014	General Budget – General Discussion, Demands for Excess Grants (General)	Dr. Shashi Tharoor	Couplets
4.	25.07.2014	Private Members' Bill on National Pension (Guarantee) Bill	Shri Hukmdeo Narayan Yadav	Poem
5.	07.08.2014	Discussion Under Rule 193	Shrimati Rama Devi	Poem
6.	07.08.2014	Discussion Under Rule 193	Shrimati Jayshreeben Patel	Poem
7.	08.08.2014	Discussion Under Rule 193	Shrimati Anju Bala	Poem
8.	13.08.2014	Discussion Under Rule 193	Shri Tariq Anwar	A Couplet

FASTER THAN FAIRIES

While participating in the Railway Budget – General Discussion – Demands for Excess Grants – Railways on 11.07.2014 Shri Adhir Ranjan Chowdhury on the basis of his experience with the Railways, has recited the following poem:-

“Faster than fairies, faster than witches,
Bridges and houses, hedges and ditches;
And charging along like troops in a battle
All through the meadows the horses and cattle:
All of the sights of the hill and the plain
Fly as thick as driving rain;
And ever again, in the wink of an eye,
Painted stations whistle by.

On hearing this, there were thumping of desks from all sides of the House.

मैं पहाड़ हूँ ।

While moving a Private Member's Resolution regarding creation of new Union Ministry for the Development of Himalayan States on 11.07.2014, Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' narrated the following poem:-

“मैं पहाड़ हूँ,

मैं इसलिए चुप नहीं कि मैं इतना शांत हूँ,
तुम नहीं जानते कि मैं कितना आक्रान्त हूँ ।

मौन हूँ तो सिर्फ इसलिए कि कहीं मेरे शांतिवन में अशांति न आये,
कहीं मंद पवन मलय समीर स्वयं तूफान बनकर न छाये।

फिर मुझे हिमालय का अनुपम धैर्य नहीं खोना है,
विश्व शांति का ध्वज लिए यहां मेरा हर एक कोना है ।

मुझे तो देश की एकता और अखंडता के लिए जीना है,
मुझे गंगा-यमुना सरसाकर जहर घूंट भी पीना है ।

मुझे विन-वमन करते विनैले नाग मिटाने हैं,
मुझे तो जन-जन के हृदय पटल पर समता के बीज उगाने हैं ।

वैसे तो मेरी एक छोटी सी चीख भी प्रलय ला सकती है ।
दिग-दिगन्त तो क्या ब्रह्मांड हिला सकती है ।

लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूंगा,
मैं प्रेम-सौहार्द-एकता का पुंज लिए विश्वशांति नहीं खोने दूंगा।

मैं विनम परिस्थितियों में भी दृढ़ता का संकल्प लिए अडिग खड़ा हूँ,
मैं देश के सौन्दर्य की अनुपम बहार हूँ ।
कठोर होते हुए भी विनम्र भाव से कह रहा हूँ

मैं पहाड़ हूँ ।”

On hearing this, there were thumping of desks from all sides of the House.

COUPLETS

While participating the General Budget – General Discussion, Demands for Excess Grants (General) on 16.07.2014, Dr.Shashi Tharoor while concluding his speech recited the following couplet of Ghalib:-

“कहाँ तो तय था उजाला हर घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए। ”

It means - *The promise was to illuminate every home. Not even a lamp lights up the city today.*

But, we, on this side of the House, are not surprised, Mr. Chairman. After all, as the immortal Ghalib put it.

Then he went on to quote the following couplet of Ghalib:-

" तेरे वादे पर जिये हम, तो ये ज्ञान छूट जाना,
कि खुशी से मर न जाते, अगर ऐतबार होता। "

It means - *I lived by your promise as I knew that it was false. Would not I have died of happiness, if I had believed it to be true?*

POEM

While participating in the Private Members Bill on National Minimum Pension (Gurantee) Bill on 25.07.2014 Shri Hukmdeo Narayan Yadav recited the following poem:-

" आएगा जी आएगा, नया जमाना आएगा ।
कमाने वाला खाएगा, लूटने वाला जाएगा ।
नया जमाना आएगा" "

श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वह नया जमाना नहीं आएगा तो लाएगा कौन? अगर नया जमाना नहीं आएगा तो हिंदुस्तान के जो करोड़ों पीड़ित, उपेक्षित और निर्धन हैं, जिनके पेट में भूख की ज्वाला धधकती रहती है, उस गरीब को देखेगा कौन ।

Further, he went on to quote great Hindi poet Ramdhari Singh Dinkar who said:-

" कुत्ते को मिलता दूध-भात, भूखे बच्चे अकुलाते हैं ।
मां की छाती से चिपक-टिटुर, जाड़े की रात बिताते हैं ।"

एक हिन्दुस्तान है, जिसके सामने यह समस्या है कि उसके बच्चे को विदेश से आयात ब्रेड, दूध, मीट कैसे मिला करेगा । बड़े लोगों के घरों के घरों में जो कुत्ते हैं, उन बड़े लोगों के कुत्तों से भी हमारी जिंदगी बदतर है ।

Before concluding, he further narrated the following poem:-

" धूप ताप में मेहनत करते, बच्चे तड़प-तड़प कर करते,
फिर भी पेट नहीं है भरता, जीवन कटता रो-रो कर,
हम चलो बसायें नया नगर, हम चलो बसायें नया नगर ।
जहां न हो छोट-बड़ाई, गले मिलें सब भाई-भाई ।
ऊंच-नीच का भेद न होवे, सुख की होवे डगर-डगर ।
हम चलो बसायें नया नगर, हम चलो बसायें नया नगर ।"

There were thumping of desks from all sides of the House.

नारी तू निर्बल नहीं हो ।

While participating in the Discussion under Rule 193 on increasing atrocities against women and children in the country on 07.08.2014 Shrimati Rama Devi concluded her speech with the following poem:-

" नारी तू चाहे सीता है या कमला,
मत समझो खुद को अबला है ।

नारी तुम निर्बल नहीं हो ।
याद करो कहानी - हम जैसी थी झांसी की रानी ।

खुद को मत बना मिट्टी की मूरत,
तुझसे अलग नहीं थी, सु-ामा जी की सूरत ।

मुश्किल है क्या अगर तू ठान ले,
मंजिलें दूर नहीं तू जान ले ।

बहनो !

आसमान पर लिख, दो नाम - कल्पना, सुनीता ने किया ये काम,
आंचल में दूध और आंखों में है पानी, अब नहीं सुहाती ऐसी कहानी ।"

There were thumping of desks from all sides of the House.

महिलाओं का परिचय ।

While participating in the Discussion under Rule 193 on increasing atrocities against women and children in the country on 07.08.2014 Shrimati Jayshreeben Patel recited the following Poem:-

" मेरा परिचय इतना कि मैं भारत की तस्वीर हूँ ।
मातृभूमि पर मर मिटने वाले उन वीरों की पीर हूँ ।
उन पुत्रों की दुहिता हूँ, जो हँस-हँस झूला झूल रहे ।
उन शेरों की माता हूँ जो रण प्रांगण में जूझ गए ।
मेरा परिचय इतना कि मैं भारत की तस्वीर हूँ ।"

The whole House heard her with rapt attention.

मार खाकर चुप रहूं मैं और हंसती भी रहूं ।

While participating in the Discussion under Rule 193 on increasing atrocities against women and children in the country on 08.08.2014 Shrimati Anju Bala recited the following Poem:-

मार खाकर चुप रहूं मैं और हँसती भी रहूं,
जुल्म कीजिए इंतहा, और तुमसे क्या कहूं ।

रूह तक घायल है, मेरे जिस्म की तो छोड़िये,
सोच कर तुम ही बताओं, और मैं कितना सहूं ।

The whole House heard her with rapt attention.

A COUPLET

While participating in the Discussion under Rule 193 regarding need to evolve an effective mechanism to deal with incidents of communal violence on 13.08.2014 Shri Tariq Anwar recited the following Urdu Couplet:-

" कोई टूटे तो उसे जोड़ना सीखो, कोई रूटे तो उसे मनाना सीखो ।
रिश्ते तो मिलते हैं मुकद्दर से, बस उसे खूबसूरती से निभाना सीखो ।"

अगर पड़ोस में आग लगती है तो हमारा भी घर जल सकता है । इसलिए ऐसा कोई कदम न उठाएं, जिससे हमारे देश के शत्रुओं को, जो कि हमारे देश को आगे जाते हुए नहीं देखना चाहते हैं, उनको उसका लाभ मिले ।

The whole House heard him with rapt attention.